Assessment for Learning C-9

मानक (Norms): मानक एक प्रकार का आधार अंक है जिसके अनुसार अन्य प्राप्तांकों की व्याख्या की जाती है। यह एक ऐसा Standard है जिसके साथ हम किसी भी प्राप्तांक की तुलना करके उसकी व्याख्या कर सकते हैं।

मानक के प्रकार (Kinds of Norms)

मानक के निम्नलिखित प्रकार है।

(1) आयु मानक (Age Norms)

(2) श्रेणी या कक्षा मानक (Grade Norms)

(3) शतांशीय मानक (Percentile Norms).

(4) प्रमापीकृत प्राप्तांक मानक (Standardized score norms):

(1) आयु मानक:- जिस मानक में विभिन्न आयु वर्गों के छात्रों द्वारा उस परीक्षण पर प्राप्त औसत प्राप्तांकों से होता है। उसे आयु मानक कहते हैं। यह किसी खास आयु स्तर के चुने गये एक प्रतिनिधि समूह का किसी खास

खास परीक्षण पर आये औसत प्राप्तांक को आयु मानक कहा जाता है।

आयु मानक को ज्ञात करने के लिए परीक्षण का विभिन्न आयु के ~~जनसंख्या की~~ प्रतिनिधिक प्रतिदर्शों पर प्रकाशित किया जाता है। प्रत्येक आयु वर्ग के लिए औसत प्राप्तांक की गणना की जाती है।

किसी छात्र द्वारा उस परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांकों की व्याख्या करने के लिए उस प्राप्तांक की तुलना उस छात्र के समान आयु वर्ग वाले छात्रों के प्राप्त प्राप्तांकों का औसत से की जाती है।

यदि छात्र का प्राप्तांक मानक से कम होते हैं तो उसे सामान्य से कम योग्य छात्र कहा जाता है। यदि छात्र का प्राप्तांक मानक से अधिक है तो उसे सामान्य से अधिक योग्य तथा जब प्राप्तांक मानक के लगभग बराबर होते हैं तो उसे औसत योग्यता वाला छात्र कहा जाता है।

(2) श्रेणी मानक या कक्षा मानक — किसी परीक्षण में श्रेणी मानक से अभिप्राय विभिन्न कक्षाओं में छात्रों के औसत प्राप्तांक से होता है। इस मानक को

सम्बन्ध कक्षा से होता है।
श्रेणी मानक तैयार करने के लिए परीक्षण को विभिन्न कक्षा के छात्रों के प्रतिनिधित्व प्रतिदर्श पर प्रदर्शित किया जाता है। तथा विभिन्न कक्षाओं के छात्रों द्वारा प्राप्त अंकों का अलग - अलग औसत ज्ञात किया जाता है। विभिन्न कक्षाओं के लिए औसत प्राप्तांक ही श्रेणी मानक माना जाता है।

(3) शतांशीय मानक :- किसी परीक्षण में छात्रों या व्यक्तियों के किसी बड़े समूह द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों के विभिन्न शतांश से है। यह शतांश वह प्राप्तांक है जिसके नीचे एक दिये गए प्रतिशत के बराबर छात्र अंक प्राप्त करता है। अर्थात शतांशीय मापन एक ऐसा बिन्दु है जिसके नीचे किसी वितरण का एक निश्चित प्रतिशत प्राप्त होता है।
शतांश मान ज्ञात करने के लिए परीक्षण को छात्रों के किसी बड़े समूह पर प्रशासित किया जाता है। तथा छात्रों के द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों से विभिन्न शतांश मान ज्ञात किया जाता है।

(4) प्रमापीकृत प्राप्तांक मानक :- वैसे मानक जो प्रामाणिक प्राप्तांक पर आधारित होता है

Date
Page

अर्थात् प्रामाणिक प्राप्तांक में आमप्राप्त
परीक्षार्थियों के मूल प्राप्तांकों को प्रामाणिक
प्राप्तांक में बदल दिया जाता है।

प्रामाणिक प्राप्तांक एक तरह का व्युत्पन्न
प्राप्तांक है जिसका एक निश्चित माध्य
एवं निश्चित मानक विचलन होता
है।

$$Z = \frac{X - M}{SD}$$

$$Z = \frac{X - M}{\sigma}$$

जहाँ X = मूल प्राप्तांक
M = माध्य
SD = Standard deviation
S.D (σ)

Z = प्रामाणिक प्राप्तांक

मानक की विशेषताएँ.

मानक की
निम्नलिखित विशेषताएँ हैं

(1) नवीनता (Novelty)

C-9

(2) प्रतिनिधित्वता (Representativeness)

(3) सार्थकता (Meaningfullness)

(4) तुलनीयता (Comparability)

(1) नवीनता :-

मानकों की नवीनता से तात्पर्य है मानक काफी समय पुराना नहीं होना चाहिए। समय-अंतराल के कारण छात्रों की योग्यता में परिवर्तन होता है तथा पहले से अधिक प्राप्तांक प्राप्त होते हैं जिससे मानक के मान प्रभावित होते हैं तथा प्राप्तांकों की सही व्याख्या नहीं हो पाती है।

अतः मानकों का समय-समय पर परिवर्तन करना चाहिए जिससे की मानकों में नवीनता बनी रहे।

(2) प्रतिनिधित्वता :-

मानकों की प्रतिनिधित्वता से अभिप्राय यह है कि मानकों को उन्हीं छात्रों के प्रतिनिधि समूह से प्राप्त आँकड़ों से तैयार किया जाना चाहिए जिनके प्राप्तांकों की व्याख्या करनी हो। परीक्षण मानक का निर्धारण किसी बड़े

प्रतिदर्श के छात्रों द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर किया जाना चाहिए क्योंकि छोटा प्रतिदर्श सम्पूर्ण जनसंख्या का सही प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है।

(3) सार्थकता :-

परीक्षण के उद्देश्य तथा मापन की जाने वाली विशेषता के स्वभाव में रखकर मानकों के प्रकारों का निर्णय लिया जाता है जिसे सार्थकता कहते हैं। जहाँ गुणों में वृद्धि आयु या कक्षा के साथ-साथ होती है तो वहाँ आयु मानक या ग्रेड मानक विकसित करना अधिक उपयुक्त होता है।

(4) तुलनीयता :-

समान योग्यता का मापन करने वाले विभिन्न परीक्षणों के मानक आपस में तुलनीय होना चाहिए ताकि उन मानकों की सहायता से विभिन्न छात्रों की तुलना की जा सकती है। ~~मानकों~~ मानकों के आधार पर किसी छात्र को श्रेष्ठ तथा किसी छात्र को निम्न स्तर बताया जाता है।